<u>अखंड मानव समाज</u>
सालीग स्वराज्य शाखा

प्रथम सभा

सत्संग, चर्चा, चिंतन, भोज.

<u>सौजन्य से</u>
अखंड मानव समाज (विश्व एवं सालीग सोसाइटी)

सालीग के ही परिवारों द्वारा, ग्राम मे सुखी समृद्ध मानव स्वराज्या की व्यवस्था और परंपरा स्थापित करने की घोषणा. प्रोग्राम की समझाइश. सालीग के, परिवारों के, सुंदरतम भविष्य को देखना, पहचानना और इस सपने को वास्तविकता बनाने का स्वराज्य कार्यक्रम, जिसमे पूरी दुनिया भी हमारा साथ देगी.

जिस जिस परिवार को घर से ही रोजगार पाने की इच्छा हो वो अप्लाई करें। हम आपको काम दिलाएंगे। इसके साथ परिवार समेत जीवन शिक्षा प्रोग्राम में समझ के लिए जुड़ेंगे जिससे अपना काम सटीक तरह से हो सके।

संपूर्ण गाँव आमंत्रित है. हर परिवार से कम से कम दो लोग आयें. 11 बजे से 1 बजे तक चर्चा और उसके बाद सब समझने वालों के एक साथ प्रीति भोज, जो की ग्राम परिवार द्वारा ही आयोजित किया जाएगा.

"हो जाऊं मै ऐसे,
मेरा परिवार, गाँव ऐसे,
समाज ऐसे.
धरती स्वर्ग हो.
मानव दिव्य हो.
प्राकृतिक समृद्धि हो.
रिश्तों मे संगीत हो.
जीवन यात्रा सुखी हो,
हर जगह हर समय
मंगल ही मंगल हो."

हर इंसान, हर परिवार
की हर ज़रूरत, परेशानी का,
सटीक, टिकाऊ, निश्चित समाधान हो.
सबका साथ सबके साथ हो.
समाधान, समृद्धि, अभय, सम्बन्ध संगीत हो.
सुख, शांति, संतोष, आनंद हो.

ग्राम स्वराज्य के प्रपोज़्ड 6 आयाम

1. शिक्षा-संस्कार-समझ
2. स्वास्थ्या-संयम-उपचार
3. उत्पादन-सेवा-कला-काम
4. economy-आदान-प्रदान
5. सम्बन्धों में न्याय-संगीत-सुरक्षा
6. प्रकृति का सुरक्षा-पोषण

जगह: गुरुकुल परिवेश, खंगरेर
दिन: 22 December, 2019, रविवार (Sunday).
कार्यक्रम: सुबह 10:30 बजे से भेंट. सुबह 11 से 1:30: समझाइश, चर्चा.
दिन 1:30 बजे: आए सदस्यों के लिए प्रीति भोज.
आने वाले २० दिसंबर शाम तक निम्न कार्यकर्ताओं को सुचना दें, की आपके परिवार से, पड़ोस से कितने और कौन लोग आ रहे हैं? जिससे बैठने और भोजन की व्यवस्था हो सके.
सुगिन्दर (7018326364), प्यारेलाल (9736909086), श्याम (7591034217), आयुष (9882883272)

कुछ ज़रूरी बातें

है ये बात हमारी ज़रूरत की
की हो सांझा हमारी समझ.
है एक आपके सोचने हेतु प्रपोज़ल.
ये प्रपोज़ल हर किसी को
सोचने पर ठीक ही लगा है,
चाहे हो बच्चा या बुजुर्ग इंसान,
हिंदू, सिख, ईसाई या मुसलमान.
आपको भी ठीक ही लगेगा.
ये है हमारा विश्वास,
क्योंकि हम सब है इंसान,
और देखने समझने पर,
सत्य की,
एक जैसी ही होती है जान, पहचान.

क्या हूँ मै? क्या है इंसान?
क्या है इंसान की ज़रूरतें?
मूल चाहना?

क्यों हैं चिंता, समस्याएं?
क्यों हो जाते हैं दुखी, क्रोधित, परेशान?
क्यों है समाज एक भीड़,
पड़ोस से देश तक फैला
एक जंग का मैदान?

अपने अपने विचार.
अपना अपना फायेदा.
ताक़त, डर, जलन, विरोध, कॉंपिटेशन.
ग़लती का जवाब ग़लती,
अपराध का अपराध..
ऐसे जीता आया है इंसान.
और ऐसे आज तक होता रहा है,
सबका नुकसान.
क्या है कोई इसका समाधान?
जो हो ना खोखला
आज तक सुने गये अनेक वादों की तरह?
क्या है कोई समाधान,
जो पक्का करे काम?

इस संपूर्ण अस्तित्व मे,
जिसका हूँ ये “मै” एक अंश,
जिस अनंत अकल सागर की बूँदें हैं,
समस्त परमाणु, आत्मायें, सूर्यों की किरण,
इसी सागर की कुछ बूँदें,
मानवों के ही पुरुषार्थ, कल्याण से,
हुआ है मानव को उपलब्ध,
21 स्वि शताब्दी मे,
मानव केंद्रित अस्तित्व ज्ञान,
समाधान.

समाधान मानवीय समाज,
परिवारिक परंपरा का,
जिससे
फल्ती फुल्ती शेष प्रकृति के साथ
आपसी विश्वास प्रेम के साथ
जी जाए हर मानव संतान.

हो नित्या बरसती
सम्मान, विश्वास, प्रेम की बारिश.

हर ज़रूरत हो पूरी,
जीने से लेकर जीवन,
जड़ से लेकर चेतन.

निस्चित काम करेगा ये पक्का.
ऐसा है ये प्रपोज़्ड समाधान.
सुनके खुद अपने मे परख लें इसे,
कर लें शुद्ध सत्य से जान पहचान.
“मानव” “समाज” की “व्यवस्था”
को सोग्गी समझ कर, जी कर,
सालीग को स्वार्ग बना सकते हैं हम.

समझदार, बुद्धिमान, स्वतन्त्र, स्वावलंबी,
सुखी, समृद्ध हो
सालीग का हर मानव और परिवार.
हो हर बच्चे बड़े को,
अपने गाँव पर नाज़.
अपने गाँव की पवित्र पावन धरा पे,
स्वराज्य का लहराए परचम.

सबके सुख के साथ अपना सुख समझ,
रिश्तों मे संगीत, कीर्तन, भजन मे अभिव्यक्त,
हो सालीग के हर मानव संतान का स्वत्व.
आए संपूर्ण धरती का इंसान,
सालीग को
अखंड मानव समाज, मानव चेतना कैलाश,
की प्रथम तीर्थ भूमि मान.
विश्व के अखंड मानव समाज के साथ
धरती पर एक नव युग का हो निर्माण.

सबके चेहरे पर हो मुस्कुराहट.
हो दिल से सुख महसूस.
हो रिश्तों मे मधुर भाव.
सबकी आँखों मे
हो एक ज्योत प्रचंड!
ऐसा हो हमारा समाज अखंड

हमारी समस्याएं

हम सालीग मे रहने वेल कुछ लोग मानव को, अस्तित्व (ईश्वर) को, मानव के वर्तमान, इतिहास को, और आज की हालत को, समाधान को समझे हैं, समझ रहे हैं. हम धरती, मानवता, मानव संबंध और स्वयं अपने अंदर का हाल समझे हैं. फलतः हमें ये बात सॉफ हो गयी की हमारी समस्याओं और सारी ज़रूरतों का सटीक समाधान हज़ारों किलोमीटर दूर बैठी सरकार, अपने से बाहर बैठा कोई भगवान, अपनी पत्नी, पति, बच्चे, रिश्तेदार, बाहर की नौकरियाँ, विश्वा का संपूर्ण धन, दौलत, ताक़त, शौर्या भी नही दे सकते. हमें कोई दूसरा समाधान कदापि नही दे सकता. समाधान खुद की समझ से ही है. हमें ग़लती पर ग़लती करते हुए समाधान प्राप्त नही कर सकते. हमें भ्रम भ्रांति भय मे जीकर समाधान प्राप्त नही हो सकता. पर हम यही करते आए हैं. दूसरों से सुख और समाधान की अपेक्षा रखते आए हैं. इसलिए आज अपने हाथ पाँव पसार के दूसरों के अधीन ही जीने मे मजबूर हो गये हैं. चाहे वो लोन माफी हो, सब्सिडी हो, कोई स्कीम हो, या हमारे बच्चों की शिक्षा संस्कार हो. हम खुद से तो कुछ अविष्कार उन्नति कर ही नही पा रहे हैं. और मानवों पर ही हमारा भला निर्भर हो गया है. आज का समाज समाज है ही नही. ये या तो कॉंपिटेशन की रेस है, भटकी हुई भीड़ है, या जंग का मैदान है.

आज के किसान अपने को दीन और हीन महसूस करते हैं, क्योंकि हम ज़रूरी बातों को कम ज़रूरी समझे हैं और कम ज़रूरी चीज़ों को बहुत अधिक ज़रूरी मान लिए हैं - जैसे धन, सुविधा को संबंध से अधिक ज़रूरी मान लिए हैं. संबंध चला जाए पर धन ना जाए!

दूसरा हमारी आशाओ के हिसाब से खरा उतरे, या फिर संसार हमारे हिसाब से चले तो हम थोड़े बहुत खुश हो जाते हैं, नही तो हम अनेक बहानो से दिन मे अधिकतर दुख या विरोधाभास मे ही रहते हैं. खुद मे सुखी कोई विरला ही दिखता है. कोशिश तो खूब चल रही है, बच्चों को महेंगे स्कूल मे पढ़ाने मे, डिग्रियाँ पाने मे, कमाने मे, बचाने मे, सीमेंट और टाईल का घर बनाने मे... पर परिवार मे रिश्तेदारी मे पड़ोस मे संबंध छूटते जा रहे हैं. जीवन नैया पार लगेगी या नही, इसका किसी को कोई आइडिया नही है. शायद मृत्यु की शैय्या पर भी हालात यही रहेंगे. कुछ पक्का नही कह सकते. ये कैसा जीना हुआ? क्या मानव बुद्धि इतनी असमर्थ है. जीवन इतना ही व्यर्थ है, व्यर्थ करने लायक है? **जब हम सुख संबंध चाहते हैं तो पा क्यों नही रहे हैं?**

इंसान की तीन ज़रूरतें

समझ, संबंध, सुविधा.

ये तीनो ही चाहिए. कोई एक भी ना हो तो परेशानी है. आज के समाज की रेस केवल सुविधा के लिए है. समझ और समबंध की शिक्षा कहीं भी नही मिलती.

स्वराज्य का समाधान ये सारी ज़रूरतें पूरी करेगा.

समझ-अनुभव से उपजे विश्वास के साथ होने और जीने मे समाधान मिलता है. स्वयं मे सत्य ज्ञान पाने मे ही मिलता है. ये स्वयं मे परखने की बात है. हर एक मानव, हर एक परिवार, हर एक गाँव और देश की सबसे गहरी चाहना धन, ताक़त, मन-मुटाव, कॉंपिटेशन मे फर्स्ट आना नही है. इससे कुछ मिलता दिखता भी नही है. हर मानव मूलतः एक समान, और एक जैसा है और उसकी सबसे गहरी चाहना फलतः एक समान है. **हर इंसान हर पल केवल सुविधापूर्वक जीना ही नही चाहता. वो पल प्रतिपल अपने अंदर, संपूर्ण संसार के साथ, सुख, शांति, संतोष, आनंद मे रहना चाहता है. वो जीने मे स्वतंत्रता, सुविधा मे समृद्धी, संबंधों मे विश्वास और संगीत चाहता है.** स्वयं मे इस भाव को और जीने मे इसकी अभिव्यक्ति को हम स्वराज्य शब्द से इंगित कर रहे हैं.

हम अपने गाँव के साथ आस पड़ोस और संपूर्ण धरती पर मानव स्वर्ग की परंपरा का सुंदर सपना देखते हैं. क्योंकि **अकेले अकेले कुछ भी हाथ मे नही लगेगा.** इसकी शुरुआत स्वयं से ही है. अपनी समझ बढ़ाने के लिए किसी दूसरे के समझने का इंतेज़ार करना मतलब इस जीवन मे मौका खो देना है. स्वयं जो समाधान समझ जाता है वो दूसरों से कोई आशा रखे बिना स्वतः ही समाधानित जी जाता है, क्योंकि इसमे ही उसे सबसे बड़ा भला दिखता है. **तो हम स्वयं तो इस रास्ते पर चल ही गये हैं. हम ये स्वराज्य की तीर्थ यात्रा आपके सत्संग मे करना चाहते हैं**. सबका समझना हमारी चाहना ही नही ज़रूरत भी है. क्योंकि एक इंसान या परिवार अपने मे सुखी रहने के लिए काफ़ी नही है. उसे आस पास शेष गाँव परिवार समाज की समझ और साथ होना भी ज़रूरी है. अकेले अकेले मे, संसार से कटके, कोई भी सुख नही पा सकता. स्वयं मे ही जाँच लें. सुख सहअस्तित्व मे है. कोई भी दो लोग सही मे हमेशा एक हैं और ग़लत मे अलग. एक होने मे सुख है और दो होने मे दुख है. आज तक धरती पर मानव ग़लत मे अलग थलग ही रहा है. हम आपने साथ सही मे एक होके संगीत मे जी जाना चाहते हैं. ये ज़रूरत महसूस करते हैं.

इंसान की हर समस्या की मूल परेशानी उसकी शिक्षा संस्कार ज्ञान मे कमी है.

ये गारेन्टी है की सत्य को समझ के जियेंगे, तो हर दो इंसान एक मत ही होंगे. आज तक की तरह हताशा नही, समाधान मिलेगा. क्योंकि सत्य हमेशा एक ही नियमों से चलता है. इंसान की पसंद नापसंद मान्यताओं कल्पनाओं की तरह बदलता नही रहता. सत्य जैसा है वैसा ही रहेगा. सत्य स्थिर है. सत्य के ज्ञान से समाधानित होके स्थिरतापूर्वक जीना हर मानव की मजबूरी है, समाधान है, वरना चाहे पैसे कितने भी कमा लें, रिश्तों मे और स्वयं मे सुख सुरक्षा से अधिक दुख, संकट ही मिलता आया है और मिलता रहेगा.

सत्य ज्ञान के बिना सब प्रयास विफल है. सत्य की समझ के साथ हो जाने मे सब निस्चित ही शुभ है, सफल है.

ग्राम सालीग मे स्वराज्य

मतलब सालीग का हर मानव अस्तित्व के सम्राट की स्थिति, भाव मे जिए. हर परिवार राज परिवार हो.

हम चाहते हैं की इस गाँव का कोई भी परिवार अपनी ज़रूरतों का समाधान कहीं बाहर खोजने की ज़रूरत ही महसूस ना करे. अपनी सब शरीर और मन की ज़रूरतें इसी गाँव मे, अपने घर मे और सबसे महावतापूर्ण बात - अपने अंदर ही पूरी हो सकती हैं. हम इतने अच्छे से समझ, संबंध और समृद्धि मे आना चाहते हैं की ग्राम सालीग का हर परिवार बाहर से लेने से अधिक, बाहर देने वाला बने. अपनी ही नही शेष दुनिया की भी ज़रूरतें पूरी होने मे दया, कृपा और करुणा से योगदान दे सके. हिमाचल को, भारत को, मानवता को समाधान के लिए प्रेरणा, मार्गदर्शन और सुविधा दे सके. इतना संपूर्ण हो हमारा गाँव सालीग, इसका एक एक परिवार और एक एक इंसान.

हम केवल धरती पर स्वर्ग की कल्पना नही कर रहे. ये ख़याली पुलाव नही है. ये सत्य पे स्थापित समझ है. हमारे पास कई मानवों के पुरुषार्थ और बलिदान से उपजा वो सार्वभौम सरल समाधान है जो निस्चित ही, शुद्ध रूप से लगने पर हर किसी के जीवन मे, हर परिवार मे, सालीग गाँव मे और अखंड मानव समाज मे भला सुनिसचीत करेगा ही करेगा. ऐसा हमें सोचने, समझने पर स्वीकार हुआ की ये समझ और समाधान अस्तित्व के नियमों की समझ पर ही आधारित है, मनगढ़ंत कल्पना नही है. वोट लेने के लाइ खोखला वचन नही है. ये हमारा प्रपोज़ल है की आप भी हमारे साथ कुछ बिंदुओं पर सोचें, चिंतन करें. इसको स्वयं जान लें. यदि सही लगे तो मान लें. है ये मौके की बात, की **सालीग धरती पर प्रथम “मानव धर्म” तीर्थ हो सकता है. यहाँ मानव अपने को समझने, संसार को समझने और सुखी जीवन जीने की कला को समझने आएगा.** मतलब एक ऐसी जगह जहाँ संसार का हर परिवार और गाँव सालीग के परिवारों से प्रेरणा लेगा. वो यहाँ समाधान प्राप्त पाने हेतु दूर देशों से आना चाहेगा. यहाँ का बच्चा बच्चा अपने ज्ञान से और भाव से श्रेस्थ होगा. संसार के लिए प्रेरणा होगा. हमारे लोग दूर देशों मे जाके ज्ञान ज्योत फ़ैलाएँगे

निमंत्रण

जीवन सुंदर होने के लिए २ घंटे केवल

हम आपको निमंत्रण दे रहे हैं की 22 तारीक़ को हमारे साथ चर्चा मे आयें. कुछ सत्य बात के प्रपोज़ल सुनें. सोचने पर बात ठीक लगे तो मानें. इसमे आपका ही नही हम सबका और आने वाली ना जाने कितनी पीढ़ियों का भला होगा. गाँव के सुंदर भविष्य की कल्पना लेके आयें – 10 साल, 50 साल, 100 साल तक की. **सबका सपना एक ही सपना होना है. धरती पर पहला मानव स्वर्ग सालीग होना है.**

इसमे स्वराज्य होगा, मतलब अपना ही राज्य. राजनीति नही. मानव विवेक के अधीन ताक़त होगी, ताक़त के अधीन मानव नही. इकलौते एक ही ईश्वर के अनेक अंश होने के नाते, सबको सब कुछ एक होने का अनुभव होगा, भाव होगा. फलतः प्रेम होगा, समझ होगी, संबंध होगा. सच और सही की राह पर जब हम चलेंगे, तो आप और मै युद्ध और कॉंपिटेशन मे नही, आप और मे अखंड हो, एक साथ सचे प्रेम से चलेंगे. परिवार से लेकर ग्राम तक का हर निर्णय सदस्यों की सर्व सम्मति से ही होगा. ताक़त से कोई बात किसी पर थोपी नही जाएगी. हर परिवार की हर ज़रूरत पूरी होने मे उनका सहयोग हम सबकी ही ज़िम्मेदारी होगी.

इसी प्रेम भाव और सचाई सुख के इरादे से हम कुछ ग्राम वासी जो भी समझे हैं, वो आपको भी समझाना चाहते हैं और साथ मे मिलकर, अपने चित्त मे, संबंधों मे और गाँव मे सुंदरता के साथ जीना चाहते हैं. **हम चाहते हैं की आप भी ज़रूर सुनने, समझने, अपनी बात सांझा करने के लिए आयें.** साथ मे बिना अहंकार के मिलकर सबकी समझ बढ़ेगी ही. इसमे हम सबका ही भला होगा.

ग्राम स्वराज्य मे आने के लिए हमारा आपको सादर निमंत्रण.

इन सवालों पर सोचें तो भला

स्वयं, रिश्तों मे सुख, संगीत

आप अपने स्वयं को कितना अच्छे से जानते हैं?

क्या आप अपने अंदर, रिश्तों मे हर समय सुख, शांति, संतोष, आनंद चाहते ही चाहते हैं? क्या आपसे ऐसा आपसे हो पाता है?

क्या दूसरों से ऐसा ना हो पाए तो आप उनको कोसते हैं?

क्या हर इंसान एक समान है? आपके जैसा ही है?

क्या आप अपने रिश्तों की स्थिति से संतुष्ट हैं? अपना शरीर के साथ, परिवार मे, पड़ोस मे, गाँव मे, समाज मे?

क्या आपको लगता है की आपके दुख का कारण आपके आस पास का संसार है?

या समझे हैं की आपके दुख का कारण आप स्वयं हैं?

क्या किसी से आपने अपनी तरफ से अपना रिश्ता नाता तोड़ लिया है?

क्या आप अपने से छोटों से सम्मान की अपेक्षा रखते हैं?

क्या आप अपने से छोटों को सम्मान देते हैं?

क्या आप रिश्तों मे अपना दायित्व पूरी तरह से निभा पा रहे हैं? यदि नही तो क्यों?

क्या आप औरों के काम आते हैं? क्या कोई और आपके काम आते हैं?

आपके लिए संबंध अधिक ज़रूरी है या सुविधा?

क्या आपका परिवार समाज मे किसी और से कोई भेदभाव, कॉंपिटेशन या जलन महसूस करता है? क्या कोई और आपसे करता है?

आपके बच्चों, शेष परिवार और आपमे आपसी समझ कितनी पक्की है?

स्वास्थ्य

क्या आपको जीवनशैली और ख़ान पान से जुड़ी कोई शरीर की परेशानियाँ हैं?

क्या आप दिनभर ठीक से साँस लेते हैं?

क्या आप भोजन के पोषण के बारे मे और शरीर के तंत्र के बारे मे ज्ञान रखते हैं?

क्या आप स्वस्थ भोजन की पहचान और उसे प्राकृतिक रूप से उगाना, बनाना और खाना सीखना चाहेंगे?

शिक्षा

क्या शिक्षा का प्रथम लक्ष्य समझदार इंसान बनाना है या पैसे कमाने वाला पर नासमझ इंजिनियर, डॉक्टर बनाना?

कढ़ा हुआ या पढ़ा हुआ - कौन इंसान श्रेष्ठ है?

1947 से अभी तक मिली शिक्षा समाज की चेतना को अधिक कढ़ाई है या सड़ाई है?

क्या मॉडर्न शिक्षा इंसान को समझदार सुविधा संपन्न सुखी समृद्ध बनाई है या पढ़ा लिखा सुवीदा संपन्न पर नासमझ दुखी दरिद्र?

क्या आपने बच्चों की शिक्षा का दायित्व संपूर्ण रूप से स्कूल पे छोड़ दिया है या माता पिता के रूप मे आप भी स्वयं उनकी शिक्षा का ख़याल करते हैं?

क्या आप अपने बच्चों को समझा पाते हैं?

क्या आपको अपने बच्चों को समझ से अधिक, डर से चलाना पड़ता है?

क्या आपके बच्चे बड़े होकर आपकी बात सुनना कम कर देते हैं?

आपको कितना भरोसा है की हमारे बच्चों को मिलने वाली सिक्षा उनको सुख, संबंध और सुविधा के साथ जीने मे काम आएगी?

क्या आप अपनी समस्याओं का सटीक समाधान पाने के इच्छुक होंगे?

क्या आप स्वयं अपने को जानने की ज़रूरत महसूस करते हैं? की "मै क्या हूँ? अस्तित्व क्या है?"

Economy (एकॉनमी अर्थव्यवस्था)

क्या आप अपनी आर्थिक स्थिति से संतुष्ट हैं?

क्या आप गाँव से बाहर पैसे कमाने के लिए काम करते हैं?

क्या आपका खेती मे विश्वास हट रहा है?

क्या आप अपने बच्चों को बाहर देश मे नौकरी करने भेजना चाहते हैं?

क्या आपको पता है की आपके परिवार की ज़रूरतें सटीक रूप से क्या हैं और कितनी? क्या आप देने से अधिक, लेने मे जीते हैं? क्या आपको लगता है की गाँव का अपना मजबूत अर्थशास्त्रा आपके परिवार और गाँव के लिए अछा रहेगा?

क्या आप हमारे साथ, अपने घर से ही कोई नया काम या कला सीखना करना चाहेंगे?

General

क्या आपकी जीवन, शरीर, परिवार, गाँव, समाज मे कोई भी परेशानियाँ है जिनका आप समाधान चाहते हैं?

क्या आपको लगता है की हमारा गाँव अपनी सब ज़रूरतों और समस्याओं का समाधान स्वयं ही पा सकता है?

आपको स्वराज्य मे के बारे मे जानने की ललक हो रही है?